लड़के खतरे में? क्या अलग कक्षाओं से होगा लाभ?

जेफ़री टॉमस

लड़कियों के मुकाबले लड़कों का कमज़ोर शैक्षिक प्रदर्शन शिक्षाविदों के लिए चुनौती बना।

यू.एस. डिफ़ेन्स विभाग

जॉन मार्क्स/ © यू.एस. डिफ़ेन्स विभाग

बिल्कुल बाएं: डेरियस फाइफर (बाएं), ट्रैविस ब्राउन और एलेक्जेंडर ग्रीन अटलांटा, जॉर्जिया के मार्टिन लूथर किंग, जू. मिडिल स्कूल में। स्कूल में छठी और सातवीं कक्षा के लड़के और लड़कियों को अलग-अलग बिठाया जाता है।
बाएं: लड़कों के दोपहर के खाने के मौके पर सदर्न लीडरशिप एकेडेमी के असिस्टेंट प्रिंसिपल बिल रेडमन सवालों का जवाब देते हुए। लुइसविल, केंटकी के इस स्कूल ने सभी कक्षाओं को लड़के और लड़कियों के हिसाब से अलग-अलग कर रखा है।

पिछले कई दशकों से सह-शिक्षा को एप्पल पाई की ही तरह खास अमेरिकी पहचान माना जाता रहा है। 1960 में उच्च शिक्षा के क्षेत्र में केवल स्त्रियों को प्रवेश देने वाले 200 से अधिक कॉलेज थे, आज इनकी संख्या 60 भी नहीं है। 1960 के दशक के 250 कॉलेजों में से बस कुछ ही केवल पुरुषों को प्रवेश देने अपनी नीति पर अडिग रह पाए हैं।

प्राथमिक और माध्यमिक स्तर पर हाल तक केवल निजी और विशेष वर्गों तक सीमित शालाएं ही केवल लड़कों या केवल लड़कियों की कक्षाएं चलाती थीं, लेकिन अब इस स्थिति बदल रही है। 6 बरस पहले जहां केवल 11 पब्लिक स्कूलों में केवल लड़कों या केवल लड़कियों की कक्षाएं चलती थीं, वहां ऐसी कक्षाओं को लड़कों और लड़कियों दोनों के लिए लाभदायक मानने वाली संस्था नेशनल एसोसिएशन फ़ॉर सिंगल सेक्स पब्लिक एजुकेशन के अनुसार 2008 की शरद ऋतु में करीब 500 पब्लिक स्कूलों में केवल लड़कों या केवल लड़कियों की कक्षाएं चलेंगी।

केवल लड़कों या केवल लड़कियों की कक्षाओं में फिर से रुचि लिए जाने के कारण: शिक्षाविदों, मनोवैज्ञानिकों और अभिभावकों का एक छोटा लेकिन मुखर समूह मानता है कि लड़के और युवक अपनी सहपाठिनों जितना अच्छा प्रदर्शन नहीं कर रहे और शायद वे खतरे में हैं।

1990 के दशक के मध्य से शैक्षिक उपलब्धियों में एक जबर्दस्त लिंग आधारित अन्तर उभरा है। अमेरिकन काउंसिल ऑन एजुकेशन द्वारा 2006 में जारी किए गए एक अध्ययन से पता चला है कि तब से स्नातक उपाधिधारी श्वेत स्त्रियों की संख्या निरन्तर बढ़ती रही है- यह प्रवृत्ति 1960 के दशक में स्पष्ट हुई थी- जबकि स्नातक उपाधिधारी पुरुषों की संख्या लगभग जहां की तहां है। शैक्षिक उपलब्धियों में सबसे अधिक लिंग आधारित अन्तराल वाले समूह अफ्रीकी अमेरिकियों में 1995-96 में पुरूषों का शालाओं/कॉलेजों में नामांकन का प्रतिशत 37 से बढ़कर 2003-04 में 40 तक पहुंच गया।

2007 में 25 से 29 वर्ष के आयु वर्ग की लगभग 33 प्रतिशत युवतियां स्नातक या उससे ऊपर की उपाधि प्राप्त थीं, जबकि इसी आयु वर्ग में इस स्तर की उपाधियां पाए युवक केवल 26 प्रतिशत थे। कम्प्यूटर विज्ञान और इंजीनियरिंग जैसे कुछ क्षेत्रों में पुरुषों का दबदबा अब भी बरकरार है लेकिन जीवविज्ञान से सम्बद्ध विषयों में उपाधिधारी स्त्रियों की संख्या 60 प्रतिशत और शिक्षा और मनोविज्ञान जैसे क्षेत्रों में 75 प्रतिशत से भी अधिक है।

अमेरिकी शिक्षा विभाग के अनुसार प्राथमिक और माध्यमिक स्तर पर प्राथमिक शाला में लड़कों के किसी कक्षा में रोके जाने की सम्भावना लड़कियों की तुलना में 50 प्रतिशत अधिक होती है, हाईस्कूल के दौरान उनके पढ़ाई अधूरी छोड़ देने की संभावना लड़कियों की तुलना में अधिक होती है, और उनमें सीख पाने में अक्षमता की पहचान की संभावना लड़कियों की तुलना में 100 प्रतिशत अधिक होती है। 75 प्रतिशत लड़कियां हाईस्कूल की परीक्षा पास करती हैं जबकि कुल 66 लड़के हाईस्कूल की परीक्षा पास करते हैं, अर्बन इंस्टीट्यूट के एक अध्ययन का अनुमान है कि अश्वेत लड़कों की तुलना में अधिक अश्वेत लड़कियां हाईस्कूल की परीक्षा पास करती हैं।

लेकिन अमेरिकी शिक्षा में लिंग समता पर हाल में आई एक रपट ने ''लड़कों पर मंडराते संकट'' की बात को आधारहीन बताते हुए कहा कि अमेरिकी लड़के और लड़कियां शिक्षा में उल्लेखनीय प्रगति कर रहे हैं और कोई भी प्रमाण यह इंगित नहीं करता कि लड़कियों की प्रगति लड़कों के पिछड़ने की कीमत पर आई है।

लेकिन इस अध्ययन के आलोचक कहते हैं कि ऐसा संकट केवल अमेरिका में ही नहीं, बहुत से देशों में आया है और केवल लड़कों या केवल लड़कियों की कक्षाओं से इस संकट को दूर करने में सहायता मिलेगी।

कक्षा में अध्ध्यापकों को लिंग आधारित खाई के प्रति अधिक जागरूक होने का आह्वान करने वाले कायचिकित्सक और मनोविज्ञानी लेनार्ड सैक्स कहते हैं, ''केवल लड़कों या केवल लड़कियों की कक्षाएं लड़कों को हानि पहुंचाए बिना लड़कियों को और लड़कियों को हानि पहुंचाए बिना लड़कों का लाभ पहुंचा सकती हैं।'' नेशनल एसोसिएशन फ़ॉर सिंगल सेक्स पब्लिक एजुकेशन के कार्यकारी निदेशक सैक्स ध्यान दिलाते हैं कि, ''विडम्बना ही है कि सहशिक्षा लिंग सम्बन्धी रुढ़ियों को ही मजबूत बनाती है जिसका परिणाम होता है भौतिकी, कम्प्यूटर साइंस, त्रिकोणमति और चलन-कलन जैसे पाठ्यक्रम पढ़ने में लडकियां कम रुचि लेती हैं।''

वह शोध आंकड़े उद्धरित करते हुए बताते हैं कि तनाव और प्रतियोगिता की स्थितियों में लड़कें और लड़कियां अलग-अलग ढंग से व्यवहार करते हैं। वह यह भी बताते हैं कि शोधकर्ताओं ने पाया है कि लड़कों और लड़कियों में मस्तिष्क का विकास अलग-अलग ढंग से होता है और उनके मस्तिष्क काम भी अलग-अलग ढंग से करते हैं। इसलिए लड़कों और लड़कियों को एक ही विषय पढ़ाने का तरीका भी अलग-अलग होना चाहिए।

सैक्स ने जून में एजुकेशन वीक में लिखा: ''वास्तविक लिंग आधारित अन्तराल योग्यता में नहीं, प्रेरणा में है- वह इसलिए नहीं है कि लड़कों और लड़कियों की क्षमताओं में अंतर है, बल्कि इसलिए है कि वे अलग-अलग ढंग से सीखना चाहते हैं। ''

लेकिन सेंचुरी फाउंडेशन के रिचर्ड डी.कैलनबर्ग जैसे विशेषज्ञ बच्चों को लिंग के आधार पर अलग करने के विरुद्ध हैं : ''किसी भी उद्देश्य से छात्रों को जाति, लिंग, आय या धर्म के आधार पर अलग किए जाने की नीति अमेरिकी सार्वजनिक शिक्षा के उद्देश्यों के विपरीत है।''

अर्ली चाइल्ड रिसर्च क्वार्टर्ली में प्रकाशित एक नए अध्ययन में पाया गया कि प्रीस्कूल में लड़कियों की बहुलता वाली कक्षाओं में लड़के विकास के स्तर पर लाभान्वित होते हैं जबकि केवल लड़कों वाली कक्षाओं में वे सीखने के कौशल में निरन्तर पिछड़ते चले जाते हैं। कक्षा में लड़कों के अनुपात का लड़कियों पर कोई प्रभाव नहीं देखा गया। यह केवल एक अध्ययन है और यह केवल प्रीस्कूल छात्रों पर किया गया है, लेकिन ऐसे परिणाम इशारा देते हैं कि लड़कों के लिए सीखने के लिए सही वातावरण का कोई भी खाका जटिल ही सिद्ध होने वाला है।

ज़्यादा जानकारी के लिए:

नेशनल एसोसिएशन फ़ॉर सिंगल सेक्स पब्लिक एजुकेशन

http://www.singlesexschools.org/home.php

यू.एस. डिपार्टमेंट ऑफ़ एजुकेशन स्टडी ऑन पब्लिक सिंगल-सेक्स स्कूल्स

http://www.ed.gov/rschstat/eval/other/single-sex/characteristics/index.html

जेफ़री टॉमस America.gov *के लेखक हैं*

कृपया इस लेख के बारे में अपने विचार *editorspan@state.gov* *पर भेजिए।*